७. दो लघुकथाएँ

– *संतोष सुपेकर*

अर्जी

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी राघवेंद्र पत्नी-बच्चों सहित अपने पैतृक कस्बे में आया हुआ है। नौकरी से छुट्टियाँ न मिल पाने की मजबूरी के चलते वह चाहकर भी हफ्ता-दस दिन से ज्यादा यहाँ नहीं रुक पाता है लेकिन उसकी इच्छा रहती है कि अम्मा-बाबू जी पूरे साल नहीं तो साल में दो-तीन महीने तो उसके साथ मुंबई में जरूर रहें। बच्चों को संयुक्त परिवार मिले, दादा-दादी का भरपूर प्यार मिले । अनिता, उसकी पत्नी भी यही चाहती है । यही सोचकर उन्होंने पाँच कमरों का फ्लैट खरीदा है पर न जाने क्यों अम्मा-बाबू जी वहाँ बहुत कम जाते हैं । साल भर में एकाध बार, वह भी चंद दिनों के लिए ।

''बाबू जी, आप और अम्मा चार-छह दिनों के लिए नहीं, चार-छह महीनों के लिए आया कीजिए । इतनी जल्दी लौट जाते हैं तो मन कचोटने-सा लगता है ।'' उसने पिछली बार उनसे जब यह कहा तो वे बोले थे, ''बेटा, मैं कितनी बार कहूँ तुझसे कि वह छोटा-सा कस्बा ही हमारी जन्म और कर्मभूमि रहा है । हमें वहाँ के अलावा और कहीं ज्यादा अच्छा नहीं लगता । महानगर के तेरे इस बड़े-से फ्लैट में हम चार-आठ दिनों से ज्यादा नहीं रह सकते।''

आज शाम, वह बचपन के अपने कमरे में घुसा । लाइट ऑन की और कोने में रखे बक्से की ओर बढ़ गया । उसके बचपन का साथी-उसका प्यार, लकड़ी का बड़ा-सा बक्सा। वह जब भी यहाँ आता है, एक बार इस बक्से को जरूर खोलकर देखता है । सहज उत्सुकतावश उसने उसे खोला । छठी-सातवीं-आठवीं कक्षा के कोर्स की कुछ पुरानी किताबें, ज्योमेट्री बॉक्स, कीलवाले तलवों के फुटबॉल शूज, एन.सी.सी. की एक्स्ट्रा ड्रेस, पुराना फोटो एलबम... और भी जाने क्या-क्या । बार-बार देखने पर भी इन चीजों को देखने आने की इच्छा मरती नहीं है । तभी उसकी नजर एकाएक पॉलीथिन की एक थैली पर पड़ी । अरे, इसमें क्या है, अब से पहले तो इसपर नजर कभी पड़ी नहीं थी । उसने उसे उठाकर खोला । अंदर पीली पड़ चुकी कागज की छोटी-छोटी-सी पर्चियाँ मिलीं । वह एक-एक की इबारत को पढ़ने लगा -''बाबू जी, आज मेरे लिए जलेबी लेते आना...। बाबू जी, आज शाम को कंपास बॉक्स चाहिए ...। बाबू जी, शाम को दो पेंसिल खरीद लाना ...। बाबू जी... बाबू जी... बाबू जी...।'' बचपन में बाबू जी से की गई फरमाइशों का पुलिंदा था वह । पढ़ते-पढ़ते उसकी आँखों में आँसू आ

परिचय

जन्म : १९६७ उज्जैन (म.प्र.)

परिचय : संतोष सुपेकर पत्रकारिता एवं जनसंचार क्षेत्र में सुपरिचित नाम है। आपके पत्र, कविता, लघुकथा, कहानी, समीक्षा, व्यंग्यलेख, विविध पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशित होते रहते हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'साथ चलते हुए', 'हाशिए का आदमी', 'बंद आँखों का समाज', 'हँसी की चीखें' (लघुकथा संग्रह), 'चेहरों के आरपार', 'यथार्थ के यक्ष प्रश्न' (काव्य संग्रह) आदि ।

गद्य संबंधी

यहाँ दो लघुकथाएँ दी गई हैं । प्रथम लघुकथा में बेटे का अपने माता-पिता के प्रति प्रेम, लगाव तथा माता-पिता का बच्चों की माँगों की पूर्ति तथा उनके जन्मभूमि से जुड़ाव दर्शाया है ।

दूसरी लघुकथा में 'संस्कार' कैसे किए जाते हैं, इसे बड़े ही सुंदर ढंग से लेखक ने दिखाया है ।

NitinTonpe.com

गए । बाबू जी का लाड़ला राघवेंद्र, राघव । कोई भी वस्तु चाहिए होती तो वह मुँह से नहीं कह पाता था । बस इच्छित वस्तु की पर्ची बनाकर बाबू जी की जेब में डाल देता था और ऐसा कभी हुआ नहीं कि बाबू जी उसकी माँगी कोई वस्तु लाना भूल गए हों या उसकी इच्छा पूरी न की हो... सोच में डूबे राघवेंद्र की आँसू भरी आँखों में एकाएक चमक आ गई । पर्चियों को पॉलीथिन की थैली में रखकर उसने बक्से को बंद कर दिया । झटपट, कागज की एक पर्ची बनाई और उसपर लिखा, ''बाबू जी, मैं दिल से चाहता हूँ कि आप और अम्मा मेरे साथ चलकर मुंबई में रहें । हर साल कम से कम दो-तीन महीनों के लिए । आपको कोई तकलीफ नहीं होगी ।''

आपका राघव

बाबू जी के कुर्ते की जेब में उस पर्ची को डालते हुए उसके हाथ अतिरिक्त रोमांच से काँप रहे थे पर मन आश्वस्त था कि उसकी यह अर्जी खारिज नहीं होगी ।

×× ××

इन्वेस्टमेंट

''यार सुरेश ?'' अशोक ने अपने पारिवारिक मित्र से बड़े अचरज से पूछा, ''मैं हमेशा देखता हूँ, तुम अपनी सौतेली माँ की दिन-रात सेवा करते रहते हो, लेकिन वह तुम्हें हमेशा बुरा-भला ही कहती है । बड़ी अजीब बात है, हमारे तो बस का काम नहीं है इतना सुनना, तुम कैसे कर लेते हो इतना सब्र ?''

''करना पड़ता है भाई ।'' सुरेश ने फीकी मुस्कान से कहा, ''इन्वेस्टमेंट सेंटर चलाता हूँ न, बाहर पैसे का इन्वेस्टमेंट करवाता हूँ और घर में संस्कारों का इन्वेस्टमेंट कर रहा हूँ ।''

''संस्कारों का इन्वेस्टमेंट, वह कैसे ?''

''बचपन में मैंने परिजनों को बुजुर्गों की सेवा करते देखा । इसी भाव का इन्वेस्टमेंट अब अपने बच्चों में कर रहा हूँ । अरे भाई, बच्चे जब मुझे माँ की सेवा करते देखते हैं तो एक ईमानदार इन्वेस्टर की तरह मुझे उम्मीद है कि उनके अंदर भी भारतीय संस्कार विकसित होकर रहेंगे ।''

('हँसी की चीखें' लघुकथा संग्रह से)

— o —

शब्द संसार

आश्वस्त वि.(सं.)=जिसे आश्वासन मिला हो, जिसे तसल्ली दी गई हो ।

खारिज वि.(अ.) = अस्वीकृत, बहिष्कृत

NitinTonpe.com

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

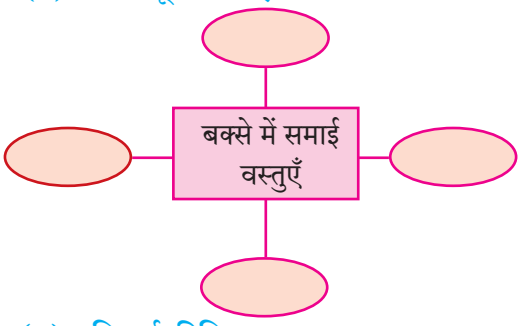

(२) घटनाक्रम के अनुसार वाक्य लिखिए :

१. बचपन में बाबू जी से की फरमाइशों का पुलिंदा था ।

२. आज शाम वह बचपन के अपने कमरे में घुसा ।

३. झटपट कागज की एक पर्ची बनाई ।

४. वह एक-एक इबारत पढ़ने लगा ।

(३) कृति पूर्ण कीजिए :

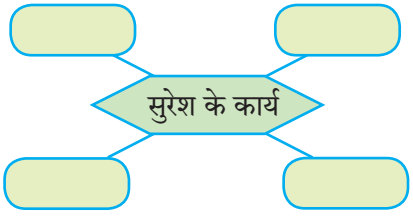

(४) रिश्ते लिखिए :

१. अनिता– राघवेंद्र = ----------

२. अम्मा– अनिता = ----------

३. बच्चे– बाबू जी = ----------

४. बाबू जी– अनिता = ----------

(५) पाठ में प्रयुक्त एकवचन और बहुवचन शब्दों की सूची बनाइए –

एकवचन		बहुवचन	
१.		१.	
२.		२.	
३.		३.	
४.		४.	

अभिव्यक्ति 'व्यवहार से संस्कार छलकते हैं', इस विधान को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

उपयोजित लेखन निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर इसपर आधारित ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों :

''कोई काम छोटा नहीं । कोई काम गंदा नहीं । कोई भी काम नीचा नहीं । कोई काम असंभव भी नहीं कि व्यक्ति ठान ले और ईश्वर उसकी मदद न करे । शर्त यही है कि वह काम, काम का हो । किसी भी काम के लिए 'असंभव', 'गंदा' या 'नीचा' शब्द मेरे शब्दकोश में नहीं है ।'' ऐसी वाणी बोलने वाली मदर टेरेसा को कोढ़ियों की सेवा करते देखकर एक बार एक अमेरिकी महिला ने कहा, ''मैं यह कभी नहीं करती ।'' मदर टेरेसा के उपरोक्त संक्षिप्त उत्तर से वह महिला शर्म से सिकुड़ गई थी । सचमुच ऐसे कार्य का मूल्य क्या धन से आँका जा सकता है या पैसे देकर किसी की लगन खरीदी जा सकती है ? यह काम तो वही कर सकता है, जो ईश्वरीय आदेश समझकर अपनी लगन इस ओर लगाए हो । जो गरीबों, वंचितों, जरूरतमंदों में ईश्वरीय उपासना का मार्ग देखता हो और दुखी मानवता में उसके दर्शन करता हो । ईसा, गांधी, टेरेसा जैसे परदुखकातर, निर्मल हृदयवाले लोग ही कोढ़ियों और मरणासन्न बीमारों की सेवा कर सकते हैं और 'निर्मल हृदय' जैसी संस्थाओं की स्थापना करते हैं ।

प्रश्नः १. ----------

२. ----------

३. ----------

४. ----------

CI9KTC

NitinTonpe.com